हिमकथा
मानव-प्रकृति के अंतरंग रिश्ते

वॉल्युम 1, अंक 1
पतझड़, 2020

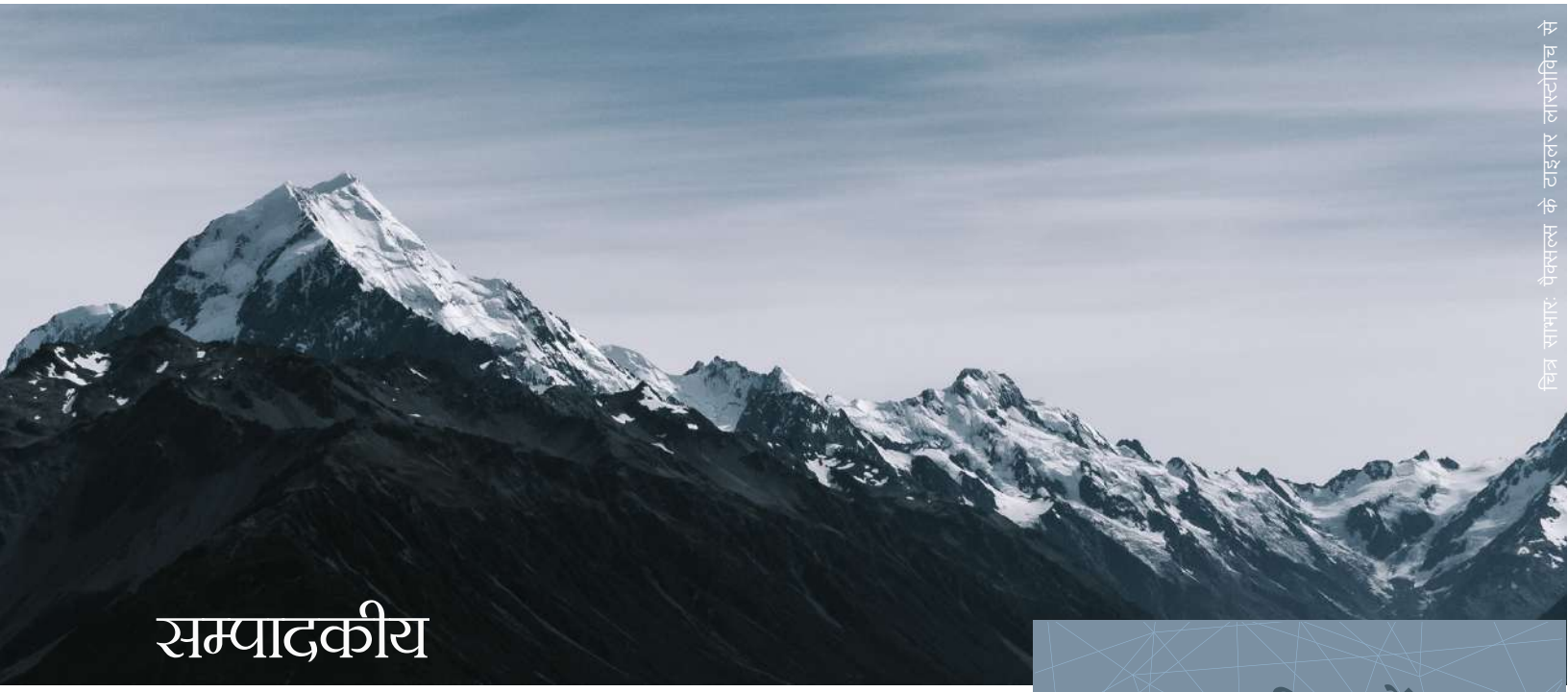

चित्र साभार: पैक्सल्स के टाइलर लास्टोविच से

सम्पादकीय

किसी जगह को अनूठा क्या चीज़ बनाती है? हममें से हर किसी के पास इस सवाल का अलग जवाब होगा, लेकिन इस बात से लगभग सभी सहमत होंगे कि लोग किसी जगह की पहचान को बदलने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। लोग अपनी परम्पराओं, आस्थाओं, संस्कृतियों और कामकाज के ज़रिये लगातार अपने आसपास की जगह से सम्पर्क में रहते हैं, हर जगह को अनूठा बनाते हैं। और जब ऐसे सम्पर्क आम ज़िन्दगी का हिस्सा बन जाते हैं, तो उनसे एक समुदाय का जन्म होता है।

लाहौल–स्पीति और किन्नौर जिलों में ऐसे कई समुदाय हैं जो कई पीढ़ियों से ऊंचे हिमालय क्षेत्र में रहते आए हैं। लोगों के जीवन के तौर–तरीके किस तरह पनपते और बदलते हैं, इसमें प्रकृति ने एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। पहाड़, घाटियां, नदियां, चरागाह और वन्य जीव स्थानीय जीवनशैली और संस्कृति का एक महत्वपूर्ण हिस्सा रहे हैं और आज भी हैं। ये कहानियां महत्वपूर्ण हैं, लेकिन अक्सर अनसुनी रह जाती हैं। हिमकथा आम लोगों और प्रकृति के बीच के इस रिश्ते पर, अलग–अलग विचारों के बीच एक तालमेल बनाने की सौम्य सी कोशिश

इस पत्रिका में:

पर्यावरण और महिलाएं
पेज 01

चरवाहे की मुश्किलें
पेज 06

हिमाचल के जंगलों में ट्रैकिंग
पेज 10

वन्य जीवों के साथ जीवन
पेज 11

यंग एक्सप्लोरर्स
पेज 15

हमारी घाटियों की कला
पेज 18

है। हम उम्मीद करते हैं कि इस पत्रिका में छपी कहानियों के ज़रिये हिमालय में मानव–प्रकृति के रिश्तों का यशोगान होता रहेगा। हिमकथा में ऐसी स्थानीय संस्कृतियों, परम्पराओं और पद्धतियों का लेखा–जोखा लिया जाएगा, जो समय की कसौटी पर खरी उतरी हैं। इस दौरान, हम इस क्षेत्र से संबंध रखने वाले महत्वपूर्ण विषयों पर विचार–विमर्श करने से भी नहीं झिझकेंगे। ये सुनिश्चित करना हमारा विशेष प्रयास रहेगा कि इस न्यूज लैटर के ज़रिये स्थानीय महिलाओं की बात भी समान रूप से सुनी जाए। हिमकथा साल में दो बारः पतझड़ और वसंत में छापी जाएगी।

हमारे पहले अंक में पहाड़ों के हर भाग से कहानियां चुनी गई हैं। हम शुरूआत कर रहे हैं लाहौल के उदयपुर से, जहां दीपशिखा शर्मा ने महिला मंडल की कुछ जोशीली महिलाओं से बातचीत की, जिन्होंने अपने जंगलों की सुरक्षा के लिए एक पहल शुरू की है। इस लेख के ज़रिये आप जानेंगे कि भारत में और पूरी दुनिया में महिलाओं ने वन संरक्षण के क्षेत्र में कितनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। फिर हम स्पीति जाएंगे जहां तेनज़िन थिनले एक चरवाहे का क़िस्सा सुनाते हैं जिसने एक ही रात में अपने कई मवेशियों को खो दिया। इस क्षेत्र में ऐसी घटनाएं असामान्य नहीं हैं, लेकिन ये कहानी बताती है कि कैसे ऐसी मुश्किलों को हल करने के लिए लोग एकजुट होते हैं। दीपशिखा भरमौर से जुड़ी एक और कहानी लाई हैं, जहां एक भालू से हुई मुठभेड़ के कारण एक हादसा हो जाता है। बेशक ऐसी घटनाएं दुर्लभ होती हैं, लेकिन उनके ज़रिये काफ़ी नुक़सान पहुंच सकता है। तेनजिन और दीपशिखा ये जानने की कोशिश करते हैं कि अगर कभी कोई ऐसी स्थिति पैदा हो जाए तो उसका सामना कैसे करें। इसके अलावा एक लघु लेख में लाहौल की, टिंकल भट्ट नाम की एक युवा फ़ॉरैस्ट गार्ड बताती हैं कि आखिर कौन सी बात से उन्हें लगातार प्रेरणा मिलती रहती है। इसके बाद हम शेरब लोबज़ांग के साथ लद्दाख चलेंगे, जो हमें एक दुर्लभ कला से परिचित कराएंगी। इसके बारे में शेरब को तब पता चला जब उनकी परवरिश कुमदॉक नामक गांव में हो रही थी, और बाद में वे जब बाकी क्षेत्रों का सफर कर रही थीं। ये दिलचस्प बात है कि ये स्मृति चिन्ह कैसे बहुत ही अनोखी जगहों पर मिलते हैं। हमने अपने युवा पाठकों के लिए भी एक खास हिस्सा रखा है, इन मजेदार गतिविधियों का श्रेय रूचि धोना को जाता है। आप अपने बच्चों या नाती–पोतों के साथ इनका आनंद उठा सकते हैं।

हिमकथा पढ़ने के लिए समय अवश्य निकालें और इस विचार मंथन का हिस्सा बनें। अगर आप कोई दिलचस्प क़िस्सा हमारे साथ बांटना चाहते हैं, या किसी महत्वपूर्ण विषय पर बात करना चाहते हैं, तो हमें अवश्य बताएं। हम आपके विचार जानने के लिए उत्सुक हैं।

अजय बिजूर
नेचर कन्जर्वेशन फाउंडेशन

पर्यावरण और महिलाएं

दीपशिखा शर्मा

सन् 1730 में, जोधपुर, राजस्थान के राजा ने अपने महल के निर्माण के लिए, अपने सैनिकों को खेजड़ी के कुछ पेड़ काटने के लिए भेजा। खेजड़ी रेगिस्तान में उगने वाले गिने–चुने पेड़ों में से एक है और भारत के कई समुदायों के लिए इनका काफ़ी सांस्कृतिक और धार्मिक महत्व है। तो खेजड़ली गांव की अमृता देवी (गांव का नाम खेजड़ी वृक्ष पर पड़ा है) के लिए खेजड़ी वृक्ष को काटना बिश्नोइयों की बेइज्जती जैसा था, जिस समुदाय से वो थीं। जब सैनिक पेड़ काटने पहुंचे, तो अमृता देवी अपनी तीन बेटियों के साथ सैनिकों और पेड़ों के बीच आ डटी। जब पेड़ों को बचाने से संबंधित बातचीत सफल नहीं हुई, तो सैनिकों ने इन चारों को मार डाला। इस बलिदान की ख़बर जंगल की आग की तरह फैली, और आसपास के गांवों के लोग भी खेजड़ली वृक्ष को बचाने के लिए वहां पहुंच गए। लेकिन सैनिकों ने कोई रहम नहीं दिखाया और 363 लोगों को मार डाला।

इस घटना के लगभग 240 साल बाद, 1970 में, उत्तराखंड के रेणी गांव की महिलाएं (तब उत्तराखंड उत्तरप्रदेश ही हुआ करता था) अमृता देवी से प्रेरणा लेकर अपने उन जंगलों को बचाने के लिए एकजुट हो गईं जिन्हें सरकारी ठेकेदार काट रहे थे। 27 महिलाएं पेड़ों से लिपट गईं और उन्होंने एक भी पेड़ को काटने नहीं दिया। बाद में अन्य गांवों के लोग भी वहां आ गए, और यह गतिरोध चार दिन तक चलता रहा, आखिरकार ठेकेदारों को वहां से जाना पड़ा। हिम्मत से जुड़ी इस कहानी की ओर पूरी दुनिया का ध्यान गया और इसे 'चिपको आंदोलन' का नाम दिया गया।

पर्यावरण के साथ महिलाओं का सदियों से बहुत गहरा नाता रहा है। महिलाओं के काम के साथ प्रकृति गहराई से जुड़ी है, और वे पीढ़ियों से अपने लिए और भविष्य की पीढ़ियों के लिए इसे सुरक्षित

चित्र साभारः विकीमीडिया कॉमन्स से

रखने के लिए कड़ी मेहनत करती आईं हैं। जिन जंगलों और नदियों को हज़ारों साल से बचाया जाता रहा है, अब पूरी दुनिया में ही उनके सामने ख़तरा पैदा हो रहा है। अंधाधुंध विकास, खनिजों की खुदाई, जंगलों की कटाई और कार्बन उत्सर्जन के कारण पर्यावरण, स्वास्थ्य और सामाजिक न्याय से जुड़ी गंभीर मुश्किलें पैदा हो गई हैं। अध्ययनों से पता चला है कि इन मुश्किलों को सभी लोग समान रूप से नहीं झेलते। जिन लोगों के कारण पर्यावरणीय और सामाजिक अन्याय पैदा होता है, उन पर इसका सबसे कम असर पड़ता है। विशेषकर पिछड़ी जातियों और वर्गों से संबंध रखने वाली महिलाएं इन मुश्किलों को सबसे ज़्यादा झेलती हैं। लेखिका – जोएन डेविडसन लिखती हैं कि पिछले कुछेक दशकों के दौरान राजस्थान में भू–जल का स्तर घटता रहा है, इसका कारण है गन्ने की खेती। इस नकदी फसल को ज़्यादा पानी चाहिए होता है। खेतों और उद्योग–धंधों में इस्तेमाल होने वाले कीटनाशकों की वजह से कई जलस्रोत प्रदूषित भी हो गए हैं। इस कारण से, और जलवायु में बदलाव जैसे बढ़ते दबावों की वजह से कम आय वाले परिवारों की महिलाओं को हर साल दूरदराज़ मौजूद जलस्रोतों से पानी लाने पर ज़्यादा समय बर्बाद करना पड़ रहा है। जंगलों की कटाई के बारे में भी उन्होंने यही लिखा है। जब गांवों के आसपास से जंगल कट जाते हैं, तो जड़ी–बूटियों, ईंधन और चारे को दूरदराज जंगलों से लाने की ज़िम्मेदारी, हमारे देश के अधिकतर भागों में महिलाओं को ही निभानी पड़ती है। दुर्भाग्य से विकास से जुड़ी किसी नीति या परियोजना को बनाते समय इन मुश्किलों की ओर ध्यान ही नहीं दिया जाता है। लेकिन अब महिलाओं ने उन संसाधनों के संरक्षण में सक्रिय रूप से भाग लेना शुरू कर दिया है, जिन पर वे काफ़ी हद तक निर्भर रहती हैं। अब पूरी दुनिया में अनेक महिला कार्यकर्ता ताकतवर पक्षधरों के खिलाफ पर्यावरण से जुड़े आंदोलनों का नेतृत्व कर रही हैं, ताकि अंधकारमय नज़र आ रहे हमारे भविष्य की दिशा बदली जा सके। भारत की, केवल 12 साल की रिद्धिमा पांडे क़ानून के ज़रिये जलवायु से जुड़े अन्याय से जूझ रही हैं, ग्रेटा थनबर्ग स्वीडन की एक्टिविस्ट हैं, जिन्होंने पूरी दुनिया में लाखों–करोड़ों युवाओं को पर्यावरण के लिए विरोध प्रदर्शन करने के लिए प्रेरित किया है। मैरिना सिल्वा नाम की एक सक्रिय कार्यकर्ता ने ब्राज़ील के वर्षावनों को बचाने के लिए राजनीति में क़दम रखा। इन महिलाओं की सूची में, इनके अलावा और भी ऐसे बहुत से नाम हैं जो सभी को पर्यावरणीय और सामाजिक न्याय दिलाने के लिए जूझ रही हैं। आज इन महिलाओं के किस्से काफ़ी नाम कमा चुके हैं, लेकिन इनकी शुरूआत बड़ी मामूली थी। इन्में से कई ने अकेले ही शुरूआत की थी, और फिर धीरे–धीरे उनके कारवां में लोग जुडते गए।

रेखा चित्रः रोहित राव

समकालीन भारत के संदर्भ में देखें, तो महिलाएं उनसे, और पूरे समुदाय से संबंध रखने वाले अनेक पर्यावरणीय मुद्दों के बारे में जागरूकता पैदा करने के लिए महिला मंडलों के मंच का इस्तेमाल करती रही हैं। पिछले साल लाहौल के सफर के दौरान मैंने उदयपुर में रहने वाले अपने एक मित्र से लाहौल के महिला मंडलों के बारे में सुना। उन्होंने मुझे बताया कि लाहौल की महिलाएं अपने गांवों की काफ़ी सक्रिय नेता हैं और उन्होंने पूरे जिले में जंगलों की सुरक्षा करने में भी मदद की है। इस साल मैं महिला मंडल की अध्यक्ष सुश्री सरिता देवी और सुश्री पिंगला देवी से बात कर पाई, जो उदयपुर की महिला मंडल की एक वरिष्ठ सदस्य हैं। मैं संरक्षण से जुड़ी इस पहल से संबंधित उनका तर्क समझना चाहती थी।

उदयपुर के महिला मंडल के बारे में मुझे कुछ बताइये।

सरिता जीः हम उदयपुर की लगभग 25 महिलाएं मंडल का हिस्सा हैं। हम मुख्य मुद्दों पर बातचीत करने के लिए हर महीने मिलती हैं, जैसे कि – हालात से जूझ रहे किसी परिवार के लिए पैसे इकट्ठा करने के लिए, किसी सफ़ाई अभियान के लिए, या फिर ये सुनिश्चित करने के लिए कि लॉकडाउन का पालन ठीक से हो रहा है या नहीं। हम सरकारी एजेंसियों के साथ भी अक्सर मिलकर काम करते रहते हैं, जैसे कि पेड़ लगाने के अभियान के दौरान वन–विभाग के साथ।

आप वनों को क्यों बचाना चाहती हैं?

सरिता जीः हम कई चीज़ों के लिए जंगलों पर निर्भर हैं, जैसे कि – जंगली फल, जड़ी–बूटियां और दवाइयां आदि। जंगलों के कारण बारिश होती है। ये नदी के किनारों को बाढ़ के दौरान कटाव से भी बचाते हैं और प्रदूषण को भी कम करते हैं। ये हमारी प्राकृतिक सम्पदा है, और हम इन्हें अपने लिए और भविष्य के लिए बचाना चाहते हैं।

गाव उदयपुर हिमाचल प्रदेश, चित्र साभारः शिवकुमार

आपने उदयपुर के आसपास जंगलों की कटाई पर रोक लगाने का फैसला क्यों और कैसे किया?

पिंगला देवीः हमने देखा कि जंगल घटते जा रहे हैं। गांव और बाहर के लोग पेड़ों की कटाई में शामिल थे। अगर कटाई इसी रफ़्तार से चलती रहती, तो जल्दी ही सारे जंगल ख़त्म हो जाते। तो हमने कार्रवाई की और पूरे गांव में ही पेड़ कटाई रोकने का फ़ैसला किया। अब हम छोटे–मोटे इस्तेमाल के लिए टूट कर गिरी टहनियां ही उठाते हैं, और सर्दियों में जलाने के लिए लकड़ियां सरकार से खरीदते हैं, जो हमें 600 से 750 रूपये प्रति क्विंटल के दाम पर मिलती है।

क्या आपको इस फैसले के कारण समुदाय का विरोध झेलना पड़ा?

पिंगला देवीः नहीं, हमें किसी का विरोध नहीं झेलना पड़ा। बल्कि जब हमने इस बारे में बातचीत की, तो सबने इस फैसले का स्वागत किया और आज तक भी सम्मान और पालन करते हैं।

अगर आप किसी को पेड़ काटते देखती हैं, तो क्या करती हैं?

पिंगला देवीः उदयपुर के लोग तो अब पेड़ नहीं काटते हैं। हां, लेकिन कभी–कभार बाहर के लोग हमारे जंगलों में नज़र आ जाते हैं। जो कोई भी ऐसे व्यक्ति को देखता है, फौरन हमें इस बारे में बता देता है। फिर हम वहां जाकर जंगल में उसके आने की वजह पूछते हैं, और अगर हमें शक होता है कि वो यहां पेड़ काटने आए हैं, तो इस बारे में वन विभाग को सूचित कर देते हैं।

वनों के कारण जंगली जीव भी गांव के करीब आ जाते हैं। इस बारे में आपके क्या विचार है?

सरिता जीः हां, बसंत के दौरान खासतौर पर भूरे भालू जंगल से बाहर आ जाते हैं। ये हमारे बगीचों से सेब खाते हैं और हमारी सब्जियां भी बर्बाद कर देते हैं। कभी–कभी हमें उन पर गुस्सा भी आता है। पर सच तो ये है कि इतने मुश्किल हालात में जिंदा रहने के लिए उन्हें भी जूझना पड़ता है। हमें उनके साथ ही जीना पड़ेगा, क्योंकि उनके बिना हमारा जंगल भी जिंदा नहीं बचेगा।

''.....पर सच तो ये है कि इतने मुश्किल हालात में जिंदा रहने के लिए उन्हें भी जूझना पड़ता है। हमें उनके साथ ही जीना पड़ेगा, क्योंकि उनके बिना हमारा जंगल भी जिंदा नहीं बचेगा। ''

संरक्षण से जुड़ी आपकी पहल पर लॉकडाउन का क्या असर हुआ?

पिंगली देवीः लॉकडाउन की वजह से हम पहले की तरह, अक्सर वन में नहीं जा पाए। लेकिन कभी–कभार हम वहां चले जाते हैं। अभी तक तो हमें पेड़ों के काटे जाने की कोई ख़बर नहीं मिली है।

आपकी ये कहानी काफी प्रेरणा देती है। हिमाचल भारत के ऐसे गिने–चुने राज्यों में से एक है जहां आज भी घने जंगल हैं। हम इन जंगलों को कैसे बचाए रख सकते हैं?

सरिता जीः हमारे समुदायों और वन विभाग की मिली–जुली कोशिशों की वजह से पूरे हिमाचल प्रदेश में ही जंगल काफ़ी घने हैं। हम हर चीज़ के लिए जंगलों पर निर्भर रहते हैं। तो हमें उन्हें और ज़्यादा समृद्ध और विविध बनाने की दिशा में काम करना चाहिए। हर किसी को अपने गांव में और ज़्यादा पेड

लगाने चाहिए और पेड़ों की अंधाधुंध कटाई रोकने के लिए क़दम उठाने चाहिए। सिर्फ़ यही एक रास्ता है जिसके ज़रिये ये सुनिश्चित हो सकता है कि हमें अपने माता–पिता से जितना मिला, हम उससे ज़्यादा भविष्य की पीढ़ियों को दे पाऐं।

——

लाहौल की महिलाओं ने अपनी सम्पदा को बचाए रखने के लिए ये पेहल की है। जंगलों के साथ जुड़ाव, हिमाचल के ज़्यादातर लोगों में आम देखा जाता है। लेकिन इस दिशा में अभी और बहुत कुछ किया जाना बाकी है। हिमाचल अनियोजित विकास के दबाव को लगातार झेलता रहा है। उदाहरण के लिए, पर्यटन की वजह से हिमाचल के कुछ हिस्सों में बेशक काफ़ी आर्थिक विकास हुआ है, लेकिन सही प्रबंधन न होने के कारण कई समस्याएं भी पैदा हुई हैं, जैसे कि कूड़े–कचरे का जमाव, जंगलों की कटाई, पानी का ख़त्म हो जाना, और प्रदूषण। इससे जीवन की गुणवत्ता प्रभावित हुई है। और लगातार ख़राब होती जीवनशैली का महिलाओं पर सबसे पहले बुरा असर पड़ता है। अभी तक जो नुक़सान हो चुके हैं, उनके प्रभाव को अब भी कम किया जा सकता है, और हमारे भू–प्रदेश की पर्यावरणीय और सामाजिक अखंडता को सुनिश्चित रखने के लिए कार्य किए जाने चाहिएं। हम पीढ़ी दर पीढ़ी अपने जंगलों, नदियों और पहाड़ों की हिफाज़त करते आए हैं, और बेहतर भविष्य के लिए हमें लगातार उनकी सुरक्षा करते रहना होगा।

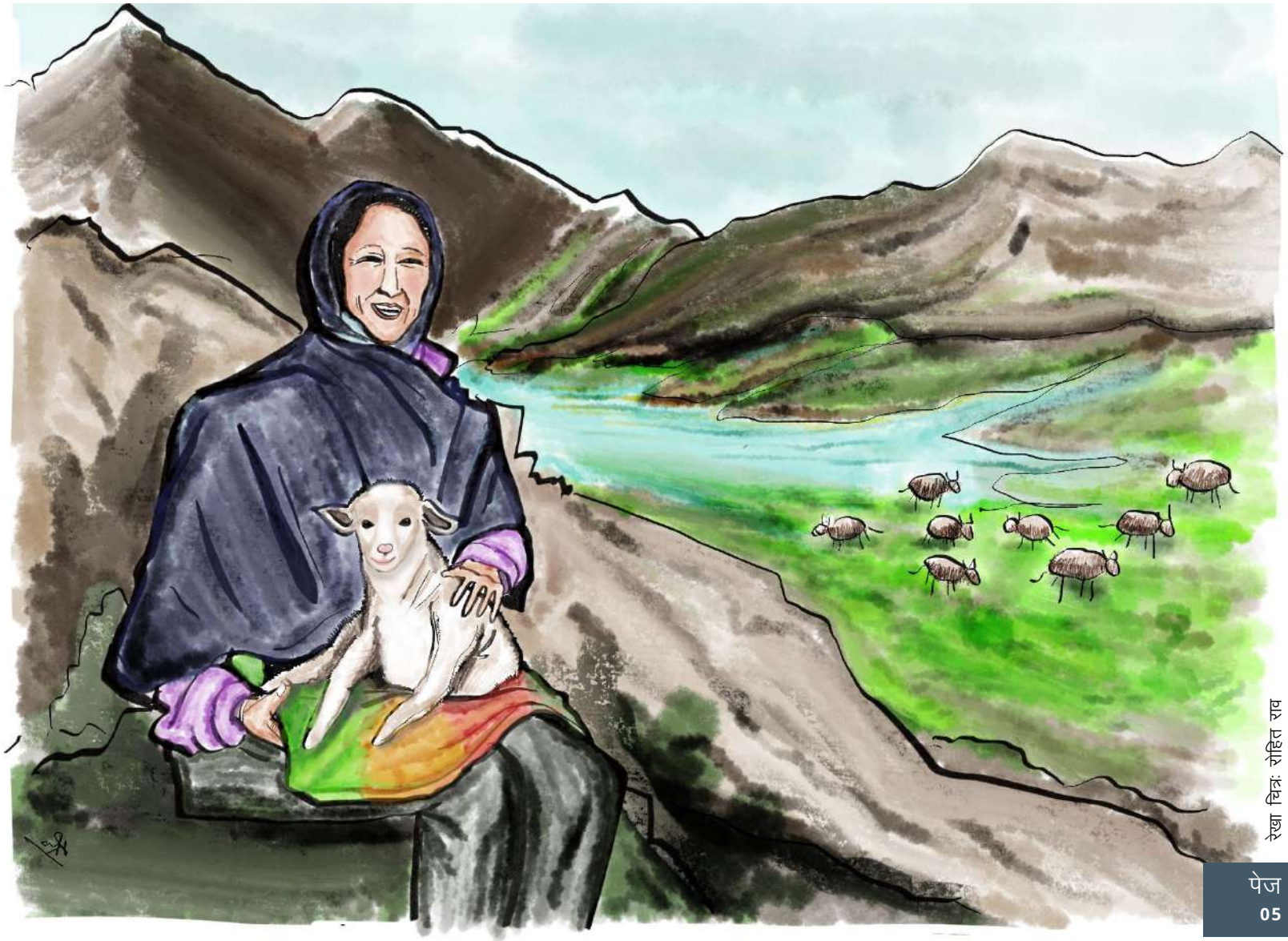

रेखा चित्रः रोहित राव

चरवाहे की मुश्किलें

तेनजिन थिनले

स्पीति घाटी मे सर्दियों के दौरान, एक सफल वर्ष को लेकर खुशियां मनाई जाती हैं, और आने वाले भरपूर साल के लिए प्रार्थनाएं की जाती हैं। इस समय का अधिकतर भाग गांवों में ही बिताया जाता है, क्योंकि अगर भारी बर्फबारी हो जाए तो उसके कारण सड़कें बंद हो जाती हैं और कहीं आना–जाना नहीं हो सकता। 2018 का साल भी ऐसा ही था। नवम्बर के महीने में, हम किब्बर में सर्दियों के आने की तैयारी में जुटे हुए थे, कि तभी कर्नाटक के मैसूर में मौजूद एक साथी का अर्जेन्ट मैसेज मुझे मिला। ''एक मवेशी पालक के कई मवेशियों को चांगो में शायद किसी जंगली जानवर ने मार दिया है।'' सिर्फ़ इतना ही विवरण मिला, इसके अलावा इस मामले को लेकर एक व्हाट्सएप वीडियो भी मिला, जो हर जगह पहुंच रहा था। मुझे लगा कि ये मामला गंभीर हो सकता है, और तब तक मौसम भी यात्रा करने के लायक था, तो मैंने फौरन किन्नौर में मौजूद चांगो जाने का फ़ैसला किया। मैंने अपने साथी तेनजिन थुकतन से मेरे साथ चलने को कहा। चांगो, किब्बर से लगभग 110 किलोमीटर दूर है।

हमें न तो मवेशियों के मालिक के बारे में कोई जानकारी थी, और न ही ये पता था कि ये हादसा हुआ कहां है। लेकिन छोटे कस्बों और गांवों की एक अच्छी बात ये है कि सब लोग एक–दूसरे को बहुत अच्छी तरह जानते हैं। तो जब हम चांगो पहुंचे तब हमें स्थानीय दुकानदारों से पता चला कि थुकतन तेंदर मवेशियों के मालिक हैं जिनका नुकसान। उन्होंने हमें उनके घर तक का रास्ता भी दिखा दिया। थुकतन जी के चांगो में सेब के बाग हैं और लिटी डोगरी में एक बाड़ा भी है। जब हम उनके घर पहुंचे, तो वो इस बात को लेकर थोड़े हैरान थे कि हम आखिर उन्हें हुए नुक़सान के बारे में बात करने इतनी दूर से क्यों आए थे। थोड़ा हिचकिचाते हुए उन्होंने हमें पूरा हादसा सुनाया।

16 नवम्बर, 2018 को बाड़े की देखरेख करने वाला राजू, बाड़े के लिए जरूरी चीज़ें लेने गांव लौटा था। उसने रात को गांव में ही

रूकने का फ़ैसला किया। अगले दिन जब वो लौटा, और बाड़े का दरवाजा खोला तो घबराए हुए मवेशी बाहर की ओर भागे। आमतौर पर उसे मवेशियों को बाड़े से बाहर निकालने के लिए काफ़ी कोशिश करनी पड़ती थी। तो वह समझ गया कि कुछ गड़बड़ है। जानवरों का व्यवहार अजीब था। दरवाजे के पास खड़े होकर उसने बाड़े के अंदर नज़र डाली तो ये देखकर हैरान रह गया कि अंधेरे में दो चमकती आंखें उसी की ओर देख रही थीं। उसने फौरन दरवाजा बंद किया और थुकतन जी को फोन पर सारी बात बताई। कुछ घंटों में ही ये ख़बर चांगो और आसपास के गांवों के हर घर तक फैल गई।

''दरवाजे के पास खड़े होकर उसने बाड़े के अंदर नज़र डाली तो ये देखकर हैरान रह गया कि अंधेरे में दो चमकती आंखें उसी की ओर देख रही थीं।''

एक हिम तेंदुआ, रात में थुकतन जी के बाड़े में दाखिल हुआ, और वहीं फंस गया। स्थानीय नेताओं से लेकर वन विभाग और स्कूल अध्यापकों तक हर कोई इस घटना के बारे में पूछने और हिम तेंदुए को देखने डोगरी आए। खुद को हुए नुक़सान की भरपाई के कई आश्वासनों के

तेनजिन थिनले

तेनजिन थिनले किब्बर के एक किसान और एक मवेशी पालक हैं। बचपन से ही वन्य जीवों में उनकी गहरी दिलचस्पी थी। पिछले करीब 20 वर्षों से वे स्पीति घाटी में वन्य जीव संरक्षण के काम में सक्रिय रूप से लगे हुए हैं। उन्होंने कई गांवों के साथ मिल कर काम किया है, ताकि वन्य जीवों से जुड़े नुक़सानों को रोका या कम किया जा सके।

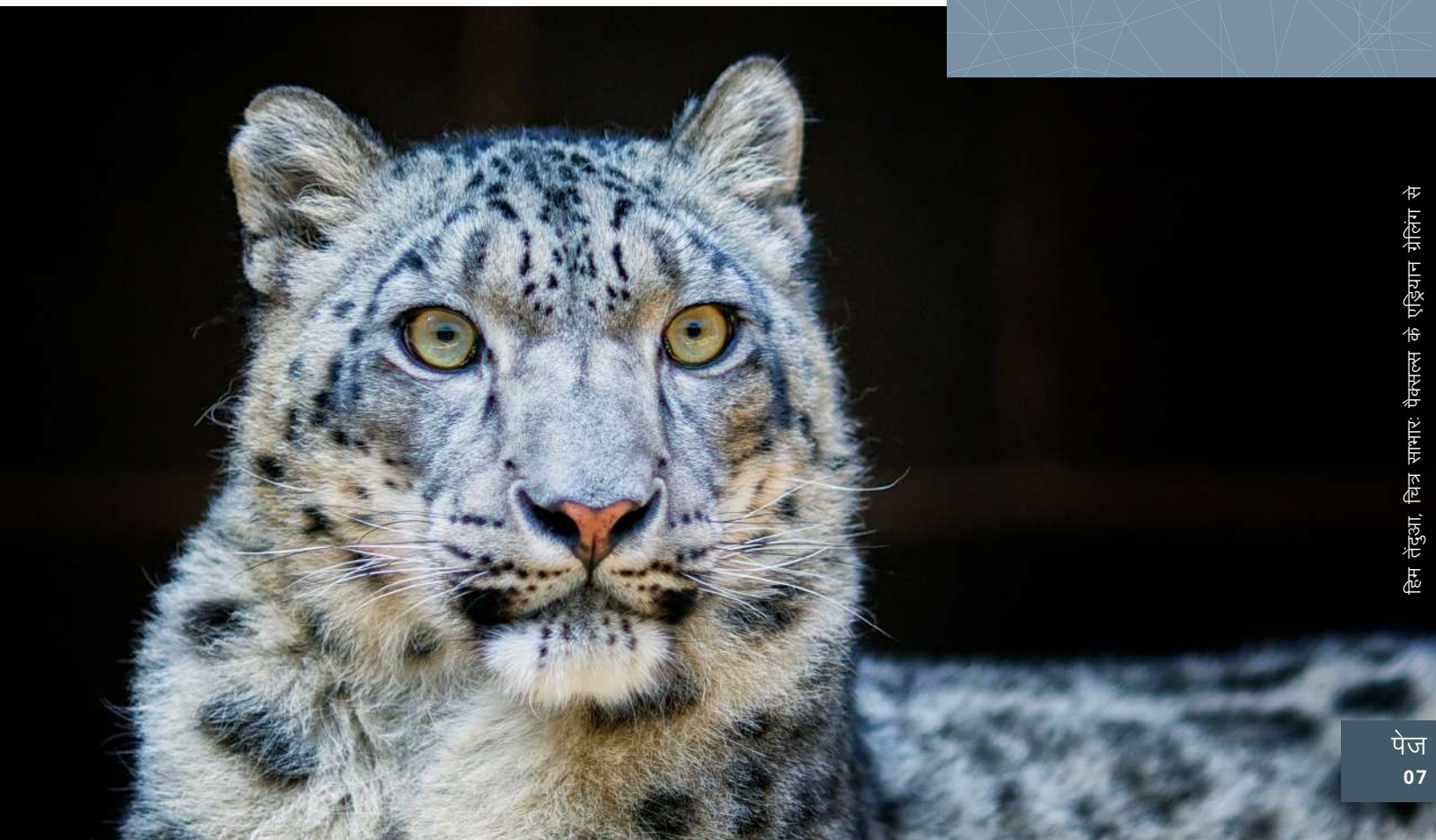

हिम तेंदुआ, चित्र साभार: पैक्सल्स के एड्रियान मोलिंग से

बाद थुकतन जी ने हिम तेंदुए को रिहा कर दिया। उन्होंने तेंदुए को रिहा करने की एक वीडियो भी बनाई ताकि ये सबूत रहे कि जानवर को बिना कोई नुक़सान पहुंचाए रिहा कर दिया गया है। जब इन्होंने बाड़े में जाकर जांच की, तो देखा कि 19 जानवर मारे जा चुके हैं और 11 गंभीर रूप से जख्मी हैं। दो–तीन दिन में इन चोटों की वजह से उनकी भी मौत हो गई। लेकिन तेंदुए को छोड़े जाने के बाद इस मामले से जुड़ी सारी गहमागहमी भी ख़त्म हो गई। इसलिए जब कुछ हफ्ते बाद मैं थुकतन जी से मिला, तो जाहिर था कि वो नाराज थे, और कोई आर्थिक मदद मिलने की उनकी उम्मीद ख़त्म हो चुकी थी। मैंने उनसे पूछा कि क्या हम डोगरी जा सकते हैं? तो वे इसके लिए तैयार हो गए।

लिटि डोगरी, चांगो से करीब 15 किलोमीटर दूर है। यहां तीन बड़े बाड़े हैं, जिनमें गांव के कई लोगों के, बकरियों और भेड़ों जैसे छोटे शरीर वाले जीव रखे जाते हैं। थुकतन जी के बाड़े में 200 से 250 मवेशी तो होते ही हैं। बाड़े की जांच करने पर हमें पता चला कि बाड़े का दरवाजा पुराना था, और ठीक से बंद नहीं होता था। हमें लगा कि हिम तेंदुआ दरवाजे से होकर अंदर घुसा होगा, और फिर वहीं फंस गया होगा। और ज़्यादा नुक़सान न हो, इसके लिए हमने तय किया कि हम बाड़े का एक नया और मजबूत दरवाजा लगाएंगे।

मवेशियों के मारे जाने के ऐसे मामलों में आप क्या कर सकते हैं, इस बारे में और विवरण पाने के लिए कृपया लेख 'वन्य जीवों के साथ जीवन' को पढ़ें।

यदि कोई जंगली जीव आपके बाड़े में दाखिल होता है, तो तुरंत अपने बीट फ़ॉरैस्ट गार्ड, जो आपके क्षेत्र का इंचार्ज हो, उससे सम्पर्क करें। और अगर आप हिमाचल प्रदेश के किन्नौर या लाहौल स्पीति में रहते हैं, तो आप +91 765 000277 पर कॉल भी कर सकते हैं। और अधिक सम्पर्क विवरण अंतिम पृष्ठ पर उपलब्ध हैं।

थुकतन जी के टूटे दरवाजे की मरम्मत, चित्र साभार: नेचर कन्ज़र्वेशन फाउंडेशन

अगले कुछ दिन बाधाओं से भरे रहे। दरवाजे बनाने वाली सबसे नजदीकी दुकान और वैल्डर 130 किलोमीटर दूर रिकांगपियो में थे। और नुक़सान न हो, इसलिए जरूरी चीज़ों को समय पर यहां तक लाना आवश्यक था। हम तीन लोग थुकतन जी के गाडी में पियो तक गए और बाड़े के लिए दरवाजा ले आए। गांव के लोग दरवाजा लगाने में मदद के लिए इकट्ठा हो गए। मुआवजे की प्रक्रिया और राहत राशि के बारे में भी स्पष्ट जानकारी नहीं थी। तो हमने स्थानीय फॉरैस्ट गार्ड्स और रेंज ऑफिसर्स से बात करी। उन्होंने हमें बताया कि संबंधित फाइल को रिकांगपियो में स्थित, डी.एफ.ओ के दफ्तर भेज दिया गया है। फिर हम डी.एफ.ओ से मिले, जिनका व्यवहार काफ़ी सहानुभूति से भरा था, और उन्होंने हमें यकीन दिलाया कि थुकतन जी को नई अधिसूचना दरों के हिसाब से राहत राशि मिलेगी। कुछ ही हफ्तों में थुकतन जी को विभाग से राहत राशि मिल भी गई।

मवेशियों के मारे जाने से जो नुक़सान होता है, और जो कुछ अन्य खर्चे करने पड़ते हैं, उनकी तुलना में वन विभाग द्वारा दी जाने वाली आर्थिक राहत राशि काफ़ी कम मानी जाती थी। लेकिन सौभाग्य से विभाग ने अगस्त, 2018 से इन दरों को बदला है ताकि ये सुनिश्चित हो सके कि मवेशी पालने वाले ऐसी स्थितियों का सामना पहले से बेहतर ढंग से कर पाएं।

वन्य जीव हमेशा से हमारे आसपास रहते आए हैं और आगे भी रहते रहेंगे। और हम सदा से ही अपने मवेशियों को उनसे सुरक्षित रखने से संबंधित एहतियात बरतते रहे हैं और आगे भी ऐसा ही करना होगा। हमारे दूरदराज इलाकों में संसाधनों तक बेहतर पहुंच के बल पर हम ये काम ज़्यादा प्रभावी ढंग से कर पाएंगे और अपने बाड़ों को बेहतर बना कर शिकारियों से सुरक्षित रख सकेंगे। इससे हम भविष्य में होने वाले संभावित नुक़सानों को रोक पाएंगे।

चरवाह मवेशियों को चराने ले जाते हुए, चित्र साभारः मुनिब खनयारी

टिंकल भट्ट

टिंकल भट्ट पिछले पांच सालों से लाहौल में वन विभाग के टैरिटोरियल विंग के साथ जुड़ी रही हैं। हिमाचल प्रदेश के वन विभाग में काम करने वाली, वे अपने परिवार की तीसरी पीढ़ी हैं। उन्हें प्रकृति को लेकर जुनून है, और उनका प्रयास है कि घाटी में मानव और वन्य जीव मिल–जुल कर रह सकें।

हिमाचल के जंगलों में ट्रैकिंग

टिंकल भट्ट

हिमाचल प्रदेश में एक फ़ॉरेस्ट गार्ड होने का मतलब है कुछ बेहद मुश्किल इलाकों में ट्रैकिंग करना, ताकि सबसे अधिक खतरे से घिरे वन्य जीवों को दर्ज किया जाए और उनकी सुरक्षा की जाए। लेकिन मुझे अपना काम रोमांचक लगता है। कुछ महीने पहले जब मैं अकेली यांग्ला गांव के नजदीक मौजूद जंगल में गश्त लगा रही थी, जैसा कि मैं अक्सर करती हूं, तो मुझ पता चला कि मैं जिन इलाको में गई थी, उन्हीं में एक काला भालू भी घूम रहा था। किसी भालू से मुठभेड़ होने की बात काफ़ी डराने वाली है, और मैंने शुक्र मनाया कि उससे मेरा सामना नहीं हुआ। लेकिन साथ ही मैं थोड़ी निराश भी थी, क्योंकि मुझे उसे देखने का मौका नहीं मिला।

फ़ॉरेस्ट गार्ड होने के कारण हम नई–नई जगह जाते रहते हैं, नए–नए लोगों से मिलते हैं, उनकी सभ्यता, संस्कृति और इतिहास से परिचित होते हैं, और वन्य जीवों के साथ उनके रिश्ते को भी देखते हैं। इस मामले में लाहौल काफ़ी मौके उपलब्ध कराता है, क्योंकि यहां की संस्कृति और विरासत काफ़ी समृद्ध है। लोग जंगलों और प्रकृति का सचमुच सम्मान भी करते हैं और ये बात मेरे काम को और ज़्यादा मजेदार बनाती है।

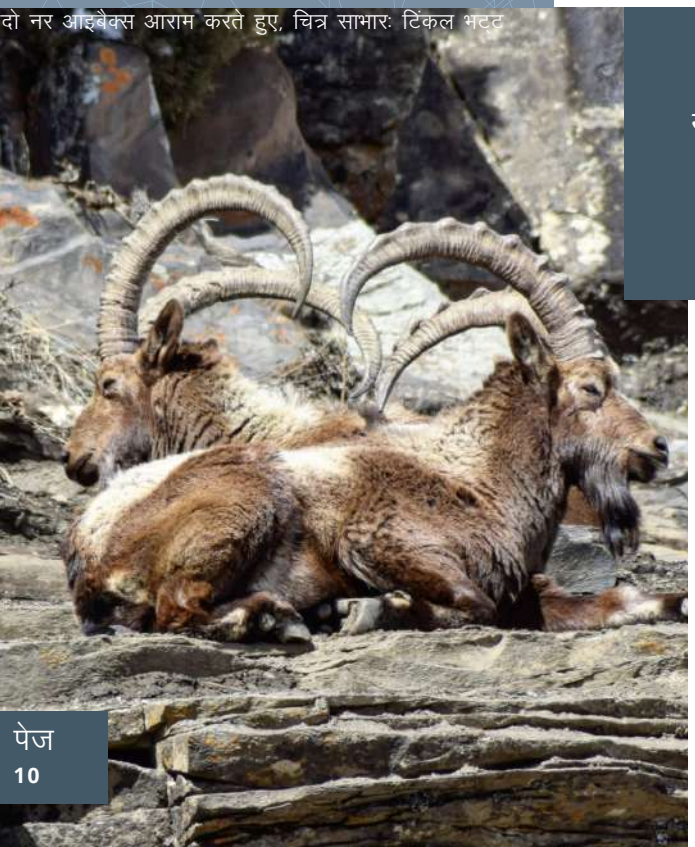

दो नर आइबेक्स आराम करते हुए, चित्र साभारः टिंकल भट्ट

''फ़ॉरेस्ट गार्ड होने के कारण हम नई–नई जगह जाते रहते हैं, नए–नए लोगों से मिलते हैं, उनकी सभ्यता, संस्कृति और इतिहास से परिचित होते हैं, और वन्य जीवों के साथ उनके रिश्ते को भी देखते हैं।''

मुझे क्योंकि काफ़ी यात्रा करनी होती है, तो मैं तस्वीरों के ज़रिये इसे दर्ज करती रहती हूं। इस चट्टान पर आराम कर रहे इन दो नर आइबैक्स की तस्वीर मैंने स्टिंगारी में 17 मार्च, 2020 को ली थी। मैं अपने एक वरिष्ठ साथी के साथ ट्रैकिंग कर रही थी, उन्होंने मुझे बताया कि अगर हम शांत बने रहते हैं तो आइबैक्स भागते नहीं, बल्कि वे भी हममें दिलचस्पी लेते हैं।

वन्य जीवों के साथ जीवन

दीपशिखा शर्मा

19 नवम्बर, 2018 का दिन चम्बा जिले के पांगी में रहने वाले विक्रम के लिए आम दिनों जैसा ही था। वे चेनाब नदी के किनारों पर, गांव के पास ही मौजूद चरागाह में अपने मवेशियों को चरा रहे थे। उन्हें ये नहीं पता था कि उनकी ज़िन्दगी बदलने वाली है। घनी झाड़ियों के बीच से गुजरते हुए उन्हें ये अंदाजा ही नहीं हुआ कि वे गलती से एक भूरे भालू के ज़्यादा ही करीब आ गए हैं। उनके अचानक नजदीक आने से भालू डर गया और उसने विक्रम पर हमला कर दिया। विक्रम ने हमले के प्रभाव को कम से कम करने की पूरी कोशिश की। उनकी जान तो बच गई, लेकिन उनके पूरे शरीर पर कई गंभीर घाव आए और उनकी एक आंख की नजर भी चली गई। वे फौरन मैडिकल मदद हासिल करने के लिए सबसे नजदीकी अस्पताल गए। बाद में उन्होंने पांगी में रेंज ऑफिस में मुआवजे के लिए अर्जी दाखिल की।

हिमाचल के एक और हिस्से में, एक हिम तेंदुआ एक मवेशी पालक के बाड़े में रात में घुस गया और उसने 20 मवेशी मार डाले। एक ही रात में मवेशी पालक के ज़्यादातर मवेशी मारे गए, और क्योंकि वह एक दूरदराज इलाके में था, तो उसे अंदाजा भी नहीं था कि अब उसे क्या करना चाहिए, और वह वन विभाग से किस प्रकार थोड़ी बहुत आर्थिक राहत हासिल कर सकता है।

मवेशी पालने वालों के लिए ये बातें नई नहीं हैं। उनका सामना अक्सर अपने गांवों और

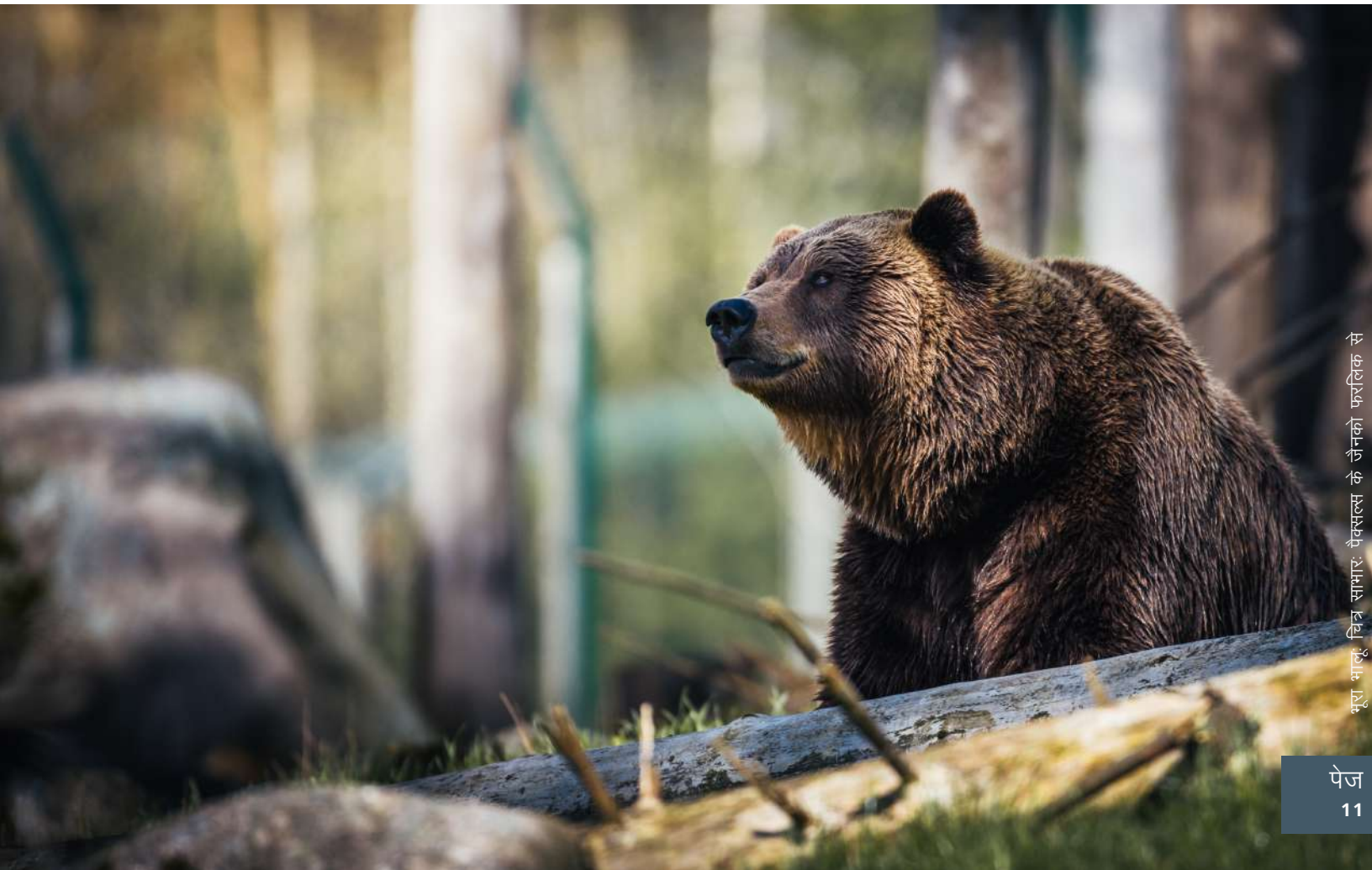

भूरा भालू; चित्र साभार: पैक्सल्स के जैनको फरलिक से

चरागाहों के इर्द–गिर्द मौजूद वन्य जीवों से होता ही रहता है। ऐसे कुछ हादसों से उन्हें काफ़ी भावनात्मक तनाव होता है और कुछ स्थितियों में तो ऐसे व्यक्ति के निजी रिश्तों पर भी उल्टा असर पड़ सकता है। वन्य जीवों के आसपास रहने की ये एक भारी कीमत है। हमें ये सुनिश्चित करना चाहिए कि इस तरह का नुक़सान उठाने वाले लोगों की अनदेखी न हो और पूरी प्रक्रिया में उनकी मदद की जाए।

''ऐसे कुछ हादसों से उन्हें काफी भावनात्मक तनाव होता है और कुछ स्थितियों में तो ऐसे व्यक्ति के निजी रिश्तों पर भी उल्टा असर पड़ सकता है।''

हालांकि कई पीढ़ियों से ये समस्या मवेशी पालने वालों की ज़िन्दगी का एक हिस्सा बनी रही है, लेकिन इस नए दौर में ऐसी कुछ आर्थिक हानियों को रोकने और कम करने से संबंधित समाधान खोजे जा चुके हैं। किसी मैडिकल इमरजैंसी के मामले में अपने आप को और अपने परिवार को समय पूर्व ही आर्थिक रूप से सुरक्षित बनाने के लिए केन्द्र सरकार की योजना– प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना के तहत दुर्घटनावश मृत्यु और अक्षमता बीमा को चुना जा सकता है। हालांकि इसकी पात्रता से जुड़ी कुछ शर्तें हैं, लेकिन आयुष्मान भारत के तहत भी थोड़ी बहुत आर्थिक कवरेज हासिल की जा सकती है। हिमाचल प्रदेश सरकार अपनी हिमाचल प्रदेश स्वास्थ्य बीमा योजना सोसायटी के ज़रिये आयुष्मान भारत की सुविधा देती है। यदि किसी व्यक्ति का जीवन बीमा या पैंशन योजना नहीं है तो उसे प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना और अटल पैंशन योजना के तहत बीमा करा लेना चाहिए। इन बीमा योजनाओं के बारे में और विवरण पाने के लिए तालिका 1 देखें। यदि किसी व्यक्ति पर वन्य जीव हमला करते हैं, तो वन विभाग के पास भी राहत राशि मुहैया कराने संबंधी प्रावधान होता है। वन विभाग द्वारा मुहैया कराई जाने वाली राहत दरों का विवरण तालिका 2 में देखें।

मवेशियों से जुड़े किसी हादसे को रोकने के लिए

थुकतन जी के बाड़े की छत को मजबूत बनाते हुए ताकि उसमें शिकारी जीव न घुस सकें, चित्र साभारः नेचर कन्ज़र्वेशन फाउंडेशन

तालिका 1:केन्द्र सरकार द्वारा प्रदान की गई मैडिकल, जीवन बीमा और पैंशन योजनाएं

योजना	योजना का प्रकार	वेबसाइट	हैल्पलाइन नम्बर	प्रीमियम (रू.)	मुआवजा/पैंशन(रू.)
प्रधान मंत्री सुरक्षा बीमा योजना (पी.एम.एस.बी.वाई)	दुर्घटना (उम्र 18–70)	www.jansuraksha.gov.in	1800-110-001/ 1800-180-1111/ 1800-180-8053 (एच.पी)	12 /साल	2 लाख
प्रधान मंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना (पी.एम.जे.जे.बी.वाई)	जीवन बीमा (उम्र 18–50)			330 /साल	2 लाख
अटल पैंशन योजना (ए.पी.वाई)	पैंशन योजना (उम्र 18–40)			42 से 1454/महीना	1.70 से 8.5 लाख
आयुष्मान भारत – हिमाचल प्रदेश या आयुष्मान भारत राष्ट्रीय (आप राज्य या केन्द्र में से एक को चुन सकते हैं, दोनों को नहीं)	मैडिकल	www.hpsbys.in	809-177-3886	बीपीएल स्ट्रीट वैंडरों के लिए मुफ्त अन्य के लिए 365 से 1000/प्रति वर्ष	5 लाख/वर्ष प्रति परिवार (अधिकतम 5 सदस्य)
		www.pmjay.gov.in	14555 / 1800-111-565		

उनके बाड़े की मरम्मत की जा सकती है, उन्हें मजबूत बनाया जा सकता है, ताकि दीवारों/दरवाजों में कोई फासला न रहे। छतों पर भी धातु की जाली लगाई जा सकती है ताकि बाड़ों पर हमला होने की सभी आशंकाएं ख़त्म हो जाएं। समय–समय पर और नियमित देखरेख किया जाना बहुत जरूरी है। लेकिन मवेशियों पर चरागाहों और जंगलों में हमले हो सकते हैं। बीमा कार्यक्रम जैसे ग्रामीण स्तर के उपायों से, ऐसे हमलों से होने वाले नुक़सानों को कम किया जा सकता है। अगर किसी गांव का बड़ा सामूहिक नुक़सान होता है तो मवेशियों का बीमा कराने की योजना बनाई जा सकती है, ऐसे में प्रीमियम और मुआवजे की रकम ग्रामीणों द्वारा तय की जाती है, और ग्राम समिति बीमा फंड को संभालती है। यदि किसी परिवार को कोई नुक़सान होता है, तो मुआवजा ऐसे ही फंड से दिया जाता है। लेकिन यदि कोई समुदाय ग्रामीण स्तर पर कोई बीमा कार्यक्रम शुरू करता है तो उसे बहुत सावधान रहना चाहिए और नियम और दिशा–निर्देश स्पष्ट रूप से तय करने चाहिए। फिलहाल स्पीति घाटी में ऐसे तीन गांव हैं, जहां समुदाय बीमा कार्यक्रम चलाता है। यदि कोई जंगली जीव मवेशी को मार देता है, तो वन विभाग भी मवेशी पालकों को मुआवजा मुहैया कराता है। लेकिन पूरी कोशिशों के बावजूद वन विभाग द्वारा ऐसे दावों को जल्दी निपटाने में देरी हो सकती है, ऐसे में धीरज रखना चाहिए। वन विभाग द्वारा दी जाने वाली राहत दरों के विवरण के लिए तालिका 2 देखें।

मवेशियों के मारे जाने की समस्या से जुड़े कुछ पारंपरिक समाधान भी

दीपशिखा शर्मा

दीपशिखा शर्मा, नेचर कन्वर्जेशन फाउंडेशन में बतौर कन्जर्वेशन कोओर्डिनेटर का काम कर रही हैं। इन्हें समुदायों के साथ काम करने और नई जगहों की यात्रा करने में आनंद मिलता है। ये उच्च हिमालयी क्षेत्रों में संरक्षण से जुड़ी परियोजनाओं पर समुदायों के साथ काम कर रही हैं।

हैं। उदाहरण के लिए लाहौल और स्पीति जिले के ग्यू गांव में इस साल मवेशियों के मारे जाने के कई मामले हुए। जिन परिवारों ने अपने मवेशी गंवाए थे, उनकी मदद के लिए समुदाय के हर परिवार ने एक–एक मवेशी प्रभावित परिवारों को दिया। ऐसी कोशिशों से न केवल मवेशी गंवाने से जुड़ा दबाव घटता है, बल्कि उसे आर्थिक तौर पर नुक़सान भी नहीं होता। हिमाचल के कुछ दूसरे हिस्सों में भी ऐसी पद्धतियों का पता चला है। मुझे विश्वास है कि ऐसे ही और भी कई स्थानीय समाधान होंगे जिनकी चर्चा मैंने नहीं की है। मैं उनके बारे में भी जानना चाहूंगी। आपके गांव में वन्य जीवों के कारण होने वाले नुक़सानों को रोकने और कम करने के जो तरीके अपनाए जाते हैं, उनके बारे में हमें लिखें। इसके अलावा अगर आप अपने गांव में इस मुद्दे को उठाना चाहते हैं या कोई बीमा कार्यक्रम शुरू करने के सिलसिले में मदद चाहते हैं तो मुझसे या मेरी टीम से सम्पर्क करें। हमारे विवरण इस न्यूज लैटर के अंतिम

चरवाहा अपने बाड़े के सामने, चित्र साभार: स्नो लेपर्ड ट्रस्ट

पेज पर मौजूद हैं। अंत में मैं यही कहना चाहूंगी कि ऐसी पेचीदा समस्याओं का कोई एक हल नहीं है लेकिन हिमाचली हमेशा से ही खुद को इन चुनौतियों के हिसाब से ढालते रहे हैं। पहाड़ों में ज़िन्दगी बिताने के लिए, और ऐसी मुश्किलों का सामना करने के लिए इस खूबी का होना जरूरी भी है।

तालिका 2: इंसानों और मवेशियों पर जंगली जानवरों द्वारा किए जाने वाले हमले के मामले में वन विभाग की राहत दरें

क्र. सं.	विवरण	राहत राशि (रू)
1	किसी इंसान की मृत्यु के मामले में	4,00,000/-
2	इंसानों को होने वाली स्थायी अक्षमता के मामले में	2,00,000/-
3	इंसानों को लगने वाली गंभीर चोटों/आंशिक अक्षमता के मामले में	75,000/-
4	इंसानों को लगने वाली मामूली चोट के मामले में, वास्तविक मैडिकल बिल के अनुसार दी जाने वाली अधिकतम राशि	15,000/-
5	घोड़े, खच्चर, भैंस, बैल, याक और ऊंट की मौत के मामले में	30,000/-
6	जर्सी और संकर नस्ल की गाय के मामले में	15,000/-
7	गाय (स्थानीय नस्ल), गदहे, चुरू, चुरी और पश्मीना बकरी की मौत के मामले में	6,000/-
8	भेड़, बकरी, सुअर की मौत के मामले में	3,000/-
9	सभी जानवरों के बच्चों की मौत के मामले में (भैंस, जर्सी गाय, और अन्य सभी नस्लें, खच्चर, याक, घोड़ा, ऊंट, चुरू, चुरी, गदहा, पश्मीना बकरी, भेड़ और बकरी)	1,500/-

Young Explorers

हलो! मेरा नाम तशी है।

और हम दोनों एक्सप्लोरर हैं।

रिगजैन, आज हम क्या करने वाले हैं?

नहीं तो।

अरे वाह! ये तो मैंने कभी देखा ही नहीं। हमारे आस-पास अनेक पशु-पक्षी हैं जिनके बारे में हम इतना नहीं जानते।

क्या आप भी हमारे साथ चलना चाहेंगे?

मैं हूं रिगजैन।

हम बहुत सी नई-नई जगहों पर जाते हैं, और नई चीज़ें देखते हैं।

अच्छा हुआ तुमने पुछा। क्या तुमने कभी चिड़िया का घर देखा है?

तुमहें पता है कि हमारा घर ही उनका घर है। हमारे घरों की दिवारों और छत्त के बीच में जो छेद होते हैं वही चिड़िया अपना घर बनाती है।

तो चलो फिर आज हम पशु-पक्षियों के घरों के बारे में कुछ नया सीखते हैं।

फिर चलिए शुरूआत हम कुछ दिलचस्प पशु-पक्षियों के बारे में पढ़ने से करते हैं।

घर हमारा सबसे प्यारा

मलाबार धनेश को दान्डेली (कर्नाटक), के जंगलों में रेत में नहाना पसंद है।

इरावाड़ी डॉल्फिन को चिल्का झील (ओडिशा), में छपछपाना बहुत पसंद है।

मोटी पूंछ वाली पैंगोलिन को गिर (गुजरात), के जंगलों में सूखी ज़मीन के अंदर बिल बनाकर रहना पसंद है।

गैंडे को काज़ीरंगा राष्ट्रीय उद्यान (असम), में नदी के किनारे कीचड़ में बैठना बहुत पसंद है।

भूरी लोमड़ी को जैसलमेर (राजस्थान), के छोटी घास के मैदानों में लुका-छिपी खेलना पसंद है।

पीली गर्दन वाले मार्टेन को नामदाफा उद्यान (अरुणाचल प्रदेश), में पेड़ों की सबसे ऊंची डालियों पर उछल-कूद करना पसंद है।

वाह! जानवर भी बिल्कुल हम जैसे ही होते हैं। उन्हें भी अपने घरों से लगाव होता है।

हां, इसमें मजा आएगा। आप सबको भी हमारे साथ आना चाहिए। ये किसी एडवैंचर से कम नहीं होगा। लेकिन हमें हमारे घरों के करीब रहना चाहिए, ताकि हम सुरक्षित रहें।

तुमने सही कहा तशी। जानवर हमारे जैसे होते हुए भी अलग होते हैं। हमारे गांव के इर्द-गिर्द जो कुछ जानवर और पक्षी रहते हैं, हमें उनके घरों की खोजबीन करनी चाहिए।

Activity

- अपने घर के आसपास मिलने वाले कम से कम पांच जानवरों, पक्षियों या कीड़ों के घरों को देखें।
- इस बारे में सोचें कि ये घर किस तरह इन जीवों को सुरक्षित रखते हैं और इन घरों को बनाने में क्या सामग्री इस्तेमाल होती है, और क्यों?
- आपको जो नए जानवर, पक्षी और कीड़े तथा उनके घर दिखते हैं, उनके बारे में एक कहानी लिखें।
- अपनी कहानी अंतिम पृष्ठ पर दिए गए पते पर हमें भेजें।

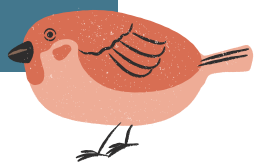

आभार:

कहानी प्रथम बुक्स से ली और परिवर्तित की गई।

कथा आभारः ये कहानीः 'घर हमारा सबसे प्यारा' इसे लिखा है कार्थिका जी. ने। प्रथम बुक्स, 2019, कुछ अधिकार सुरक्षित। सीसी बाई 4.0 लाइसैंस के तहत जारी।

कथा चित्र आभारः मुख पृष्ठ सहित सभी चित्र छाया प्रभात द्वारा बनाए गए हैं। प्रथम बुक्स, 2019, कुछ अधिकार सुरक्षित। सीसी बाई 4.0 लाइसैंस के तहत जारी।

अन्य आभारः 'घर हमारा सबसे प्यारा' को प्रथम बुक्स द्वारा स्टोरी वीवर पर मुद्रित किया गया है। हम फोटोग्राफर, लेखक और विशेषज्ञ राधा रंग राजन के आभारी हैं जिन्होंने इस पुस्तक में इंसानों के अलावा बाकी सभी से संबंधित जानकारियां दी हैं।

रिगजैन और तशी के रेखा चित्र रोहित राव द्वारा

पृष्ठ अवधारणाः रूचि धोना (लैट्स ओपन ए बुक)

हमारी घाटियों की कला

शेरब लॉबजांग

पहाड़ों में ज़िन्दगी काफ़ी मुश्किल होती है। यहां शारीरिक फिटनैस के साथ–साथ दिमागी तौर पर भी बहुत मजबूत होने की जरूरत होती है। खासकर हमारे बुजुर्ग जब अपनी जवानी के दिनों की कहानियां सुनाते हैं तो इस बात का बखूबी अहसास होता है। वे बताते हैं कि वे कैसे सर्दियों के लम्बे महीने काटते थे, कैसे अपने मवेशियों की देखरेख करते थे, हमारी पीढ़ी को तो इन सब बातों पर विश्वास ही नहीं होता है। हमारी ज़िन्दगी में जानवरों की एक खास जगह है, और वे भी पहाड़ी लोगों की तरह ही काफ़ी जोशीले होते हैं। लद्दाख में हुई मेरी परवरिश के दौरान, जानवर मेरी ज़िन्दगी का भी एक अहम हिस्सा थे, जैसे कि – भेड़, बकरी, गधा, घोड़ा और याक। कभी–कभार जंगली जानवर भी नज़र आ जाते थे। उनसे सामना तब होता था जब वे पालतू मवेशियों को शिकार बनाते थे।

मेरी परवरिश कुमदोक गांव में हुई, जो लद्दाख के चांगथांग इलाके के नजदीक है। बचपन में मुझे पहाड़ों में घूमने में बड़ा मजा आता था। मुझे अब भी याद है कि मैं अपनी मां के साथ, हमारे गांव के आसपास मौजूद चरागाहों में गांव के मवेशियों को चराने ले जाती थी। हर परिवार बारी–बारी से ये काम करता था। इस दौरान मेरी मां मुझे उन जंगली जानवरों को दिखाती थी जो हमारे गांव के आसपास मौजूद चरागाहों में दिखते थे। हमें अपने मवेशियों को इन भूखे मांसाहारियों से सुरक्षित रखना होता था। मुझे खुले इलाके बहुत दिलचस्प लगते थे, और आज भी वे यादें मुझे बहुत आनंद देती हैं जो चरागाहों का जायजा लेने से जुड़ी हैं। जिस दिन पहली बार मैंने इन चरागाहों में मौजूद कुछ चट्टानों पर कुछ दिलचस्प कलाकृतियां देखी थीं, उनकी याद आज भी मन में बसी हुई है।

रेखा चित्र: रोहित राव

तब मैं 13 साल की थी, और सोचती थी कि इन्हें किसने बनाया होगा। मैंने मां से इस बारे में पूछा तो उन्होंने बताया कि इन्हें बहुत साल पहले बनाया गया था, शायद हमारे दादा–परदादा के दौर से भी काफ़ी पहले। ये उस समय की बात है जब न तो कॉपियां होती थीं, न पैंसिल, और न ही स्कूल। इसीलिए उन लोगों ने इन कलाकृतियों को चट्टान पर बनाया होगा।

कुछ साल बाद, उच्च शिक्षा पाने के लिए मैंने गांव छोड़ दिया। हर साल जब मैं घर लौटती, तो पाती कि मेरे गांव में मवेशियों की संख्या कम होती जा रही है। कुछ साल पहले सभी लोगों ने भेड़–बकरी पालना छोड़ दिया। अपनी शिक्षा पूरी करने के बाद मैंने वन्य जीव संरक्षण के क्षेत्र में काम करना शुरू कर दिया। अपने काम के दौरान मुझे लद्दाख में कई जगहों पर जाना पड़ा। वहां मैंने स्थानीय लोगों की हर पीढ़ी से बातचीत की। मैंने उन शोधकर्ताओं के साथ भी काफ़ी निकटता से काम किया, जो हम लद्दाखी लोगों के साथ प्रकृति के संबंध का अध्ययन करने की कोशिश कर रहे थे। इस दौरान मैं अक्सर चट्टानों पर बनी उन कलाकृतियों की तरफ लौटती थी जो मेरी मां ने मुझे दिखाई थी। इन कलाकृतियों से पता चलता था कि हमारे पूर्वजों का प्रकृति और जीव–जंतुओं के साथ एक खास रिश्ता रहा होगा। इससे इन कलाकृतियों में मेरी दिलचस्पी और बढ़ी जो दुर्लभ भी हैं और बहुत खास भी। पिछले कुछ वर्षों में मैंने कुछ बहुत ही अनोखी जगहों पर चट्टानों पर बनाई गई कलाकृतियां देखी हैं। जब भी मुझे कोई ऐसी नई कलाकृति मिलती है, मैं जरूर उसकी तस्वीर खींच लेती हूं। मैं अक्सर सोचती हूं कि कला के ज़रिये हमारे पूर्वज हमें क्या बताने की कोशिश कर रहे थे। मैं ऐसी ही कुछ तस्वीरें और अपने विचार आपके साथ साझा करना चाहूंगी।

शेरब लॉबजांग

शेरब लॉबजांग, लद्दाख के लेह जिले में मौजूद कुमडॉक गांव से हैं। परवरिश के दौरान उन्हें अपने गांव के आसपास वन्य जीव नज़र आते थे, और इससे वे प्रकृति के प्रति आकर्षित हो गईं। फुर्सत में उनका पसंदीदा काम होता है गांव के बड़े–बुजुर्गों से पारंपरिक कहानियां सुनना। पिछले पांच साल से वे लद्दाख में बच्चों के साथ काम कर रही हैं ताकि प्रकृति के संरक्षण के लिए आने वाली पीढ़ी को तैयार कर सकें।

यूले टोक्पो, लद्दाख के पश्चिमी हिस्से में बसा एक गांव है। सिंधु नदी के किनारे–किनारे चलते हुए मुझे ये अनोखी रॉक आर्ट यानी चट्टान पर बनी कलाकृति नज़र आई। इसमें एक शिकारी के तीर–कमान का रूख मुड़े हुए लम्बे सींगों वाले एक जीव की ओर है, जबकि एक गार्ड डॉग उसे देख रहा है। तो क्या हमारे पूर्वज आहार के लिए शिकार करते थे? शायद तब वे भेड़–बकरियां नहीं पालते

शिकारी, शिला चित्र, उले, चित्र साभार: शेरब लॉबजांग

'हंट्समैन' / 'शिकारी' शिला चित्र, ग्या–मिरू, चित्र साभारः शेरब लॉबज़ांग

होंगे। वरना वे क्यूं शिकार करते? उन्होंने कब मवेशियों को पालना शुरू किया, और हमने कब शिकार करना बंद किया? मवेशियों को पालने की वजह से ही हम शिकार करना बंद कर पाए। बेशक शिकार रूक गया है, लेकिन तीरंदाजी अब भी एक लोकप्रिय खेल बनी हुई है। हर साल सर्दियों में तीरंदाजी की सांस्कृतिक प्रतियोगिता होती है जिसमें बहुत लोग हिस्सा लेते हैं। हिमालय के कई पहाड़ी समुदायों में ये एक आम परम्परा है।

मैंने चट्टान पर बनी इस तस्वीर की फोटो खींची। ये एक घुड़सवार की तस्वीर है, और लेह को मनाली से जोड़ने वाले हाइवे पर मिरू और ग्या गांवों के बीच मौजूद है। मेरे एक वरिष्ठ साथी ने मुझे ये तस्वीर दिखाई थी। आज अगर आप इस इलाके से होकर गुजरेंगें, तो आपको ये घुड़सवार नज़र नहीं आएगा। दुर्भाग्य से सड़क निर्माण के दौरान उस चट्टान का काफ़ी बड़ा हिस्सा बर्बाद हो गया जिस पर ये रॉक आर्ट मौजूद थी। लेकिन ये कलाकृति हमें घोड़ों की उस भूमिका की याद दिलाती है, जो उन्होंने हमारे पूर्वजों की ज़िन्दगी में निभाई होगी। घोड़े आवागमन का सबसे बढ़िया जरिया थे, चाहे बात शिकार की हो, या बाद में कारोबार और वस्तु–विनिमय के ज़रिये चीज़ों के लेनदेन की। वाहनों के आ जाने से घोड़ों का महत्व घट गया है। फिर भी हमारे समुदायों में आज भी उनकी एक महत्वपूर्ण सांस्कृतिक भूमिका है। लोसर के दौरान आज भी कुछ हिस्सों में घोड़ों की दौड़ होती है। लोसर का मतलब है नया साल, और इसे तिब्बत के लूनी सोलर कैलेंडर के पहले दिन मनाया जाता है। पहले एक और खेल भी खेला जाता था – ता पोलो। ता का मतलब है घोड़ा, और पोलो का मतलब गेंद। कहीं ये पोलो का कोई आदिम रूप तो नहीं? मैं आज भी ये सोच कर हैरान होती हूं कि हमारे पूर्वजों ने आखिर इसे सीखा कहां से होगा!

एक बार मैंने एक दिलचस्प तस्वीर देखी थी, जिसमें कुछ घुड़सवार एक बड़े से जानवर का पीछा कर रहे थे। मैं सोचने लगी कि क्या ये याक हैं? मैंने अपने

'घुड़सवार और याक' शिला चित्र, चित्र साभारः शेरब लॉबज़ांग

आइबैक्स शिला चित्र, चित्र साभार: शेरब लॉबज़ांग

गांव के कुछ बुजुर्गों से बात की, तो उन्होंने कहा कि हां ये सचमुच याक हैं, जंगली याक! स्थानीय लोग इन्हें डौंग कहते हैं, लेकिन ये काफ़ी समय से नज़र नहीं आए हैं। पालतू याक, जंगली याक के ही वंशज है। हमारे बुजुर्गों ने बताया कि डौंग का आकार, हमारे घरेलू याक से कई ज़्यादा बड़ा होता है। आज ये चांगचैनमो के एक छोटे से हिस्से में मिलता है, और ये इलाका काफ़ी हद तक अनछुआ है। मैं सोचती हूं कि क्या इन इलाकों में डौंग जैसे कुछ दूसरे जानवर भी रहते रहे होंगे।

मीरू गांव के नजदीक फुयुल घाटी के मुहाने पर मैंने चट्टानों पर कुछ बहुत ही दिलचस्प आर्ट देखी, जब मैं सर्वे कर रही थी। इन कलाकृतियों में जंगली जानवरों और स्तूपों की तस्वीरों के साथ–साथ लिपि भी थी जिसे पहचानना मुश्किल था। बौद्ध धर्म में धार्मिक संरचनाओं को स्तूप कहते हैं। कुछ चित्र आइबैक्स जैसे लग रहे थे, क्योंकि उनके लम्बे सींग बनाए गए थे। मुझे ये बात खासतौर पर दिलचस्प लगी क्योंकि पिछले तीन वर्षों में किए गए हमारे सर्वे के दौरान इन इलाकों में आइबैक्स नहीं पाए गए थे। कहीं ये रॉक आर्ट ये तो नहीं बता रही कि प्रागैतिहासिक दौर में इन घाटियों में आइबैक्स रहा करता था? कहना मुश्किल है।

मुझे अभी तक जो छवियां मिली हैं, ये उन्हीं में से कुछ हैं। बहुत सी ऐसी छवियां अभी तक खोजी नहीं गई हैं, और मुझे उम्मीद है कि इसी तरह मैं उन्हें ढूंढ़ती और उनसे जुड़ी कहानियों को आपके साथ साझा करती रहूंगी। इस बात के लिए मैं खुद को खुशकिस्मत समझती हूं कि मुझे ये प्राचीन अवशेष नज़र आए जो हमारी विरासत का एक हिस्सा हैं, लेकिन मुझे चिंता उन अवशेषों को लेकर है, जिन्हें हम अपनी अज्ञानता के कारण खोते जा रहे हैं।

'गांव का दृश्य' शिला चित्र, फुयुल घाटी, चित्र साभार: शेरब लॉबज़ांग युवा खोजी

रॉक आर्ट यानी चट्टानों पर कला का इतिहास शायद हज़ारों साल पुराना है, और ये हमारे पूर्वजों द्वारा हमारे लिए छोड़े गए संदेश हैं। इनकी तरफ ध्यान दिया जाना चाहिए, इनकी देखरेख होनी चाहिए। अगर हमने इन्हें गवा दिया, तो शायद हमारी विरासत का एक महत्वपूर्ण हिस्सा भी हम खो देंगे। ये बात सिर्फ़ लद्दाख के लिए ही नहीं, बल्कि उन सभी इलाकों के लिए सच है जहां इस तरह की रॉक आर्ट हमें अतीत से जुड़ी कोई कहानी सुनाती है। अब ये ज़िम्मेदारी हम पर है कि हम उन्हें दोबारा खोजें और वे जो कमाल की कहानियां बयान करती है, उसका आनंद लें। ये कहानियां हमारे पूर्वजों की हैं जो वो हमारे लिए छोड़ कर गये हैं।

''रॉक आर्ट यानी चट्टानों पर कला का इतिहास शायद हज़ारों साल पुराना है, और ये हमारे पूर्वजों द्वारा हमारे लिए छोड़े गए संदेश हैं। इनकी तरफ ध्यान दिया जाना चाहिए, इनकी देखरेख होनी चाहिए। अगर हमने इन्हें गंवा दिया, तो शायद हमारी विरासत का एक महत्वपूर्ण हिस्सा भी हम खो देंगे। ''

हमें लिखें

हर जगह एक अनूठी कहानी सुनाती है: उसकी संस्कृति, परम्परा और पद्धतियों
या फिर पहाड़ों के साथ उसके पवित्र संबंध के बारे में।
हिमकथा ऐसी ही कहानियों को सबके
साथ बांटने का एक मंच है और हमारे अलावा शायद ही कोई उन्हें बेहतर ढंग से सुना पाए!

तो आइये इन अनुभवों को, अपने गांवों, परम्पराओं और पद्धतियों से जुड़ी इन कहानियों को इस न्यूज लैटर के ज़रिये एक–दूसरे के साथ, और बाकी दुनिया के साथ बांटें।
अगर न्यूज लैटर के विषय में आपका कोई फीडबैक हो, सुझाव हो या शिकायत हो तो हमें जरूर बताएं।
नीचे दिए गए ई–मेल पते / नम्बर पर अपनी कहानियां, फीडबैक और
तस्वीरें आदि अपने नाम और सम्पर्क विवरण के साथ भेजें:

ई–मेल: **himkathaindia@gmail.com**
फोन नम्बर / व्हाट्सएप: **+91 765 000 2777**
वेबसाइट: **www.himkatha.org**

इसके अलावा आप हमें इस पते पर पत्र भी लिख सकते हैं:
Himkatha
Nature Conservation Foundation
1311 "Amritha", 12th A Main,
Vijayanagara, Mysore, 570017, Karnataka

Team Credits:
Editor: Ajay Bijoor | Newsletter Design: Vinutha & Deepshikha | Newsletter Logo: Shrunga Srirama
Young Explorer Concept: Ruchi Dhona | Young Explorer Design: Janhavi Ranjan & Deepshikha
Translation: Arya Atul | Design: Canva Pro